जेते हैं पहार भुव पारावार माहिं,
तिन सुनि कै अपार कृपा गहे सुख फैल है।
भूषन भनत साहि तनै सरजा के पास,
आइबे को चढ़ी उर हौंसनि की ऐल है॥
किरवाल बज्र सों बिपच्छ करिबे के डर,
आनि के कितेक आए सरन की गैल है।
मघवा मही मैं तेजवान सिवराज वीर,
कोट करि सकल सपच्छ किये सैल है॥६६॥

शब्दार्थ—पारावार=समुद्र। ऐल=रेल, ज़ोरों का प्रवाह। हौंस=हविस, इच्छा। कोट करि=किले बनाकर। मघवा=इन्द्र।

अर्थ—समस्त पृथ्वी और समुद्र में जितने भी पहाड़ हैं उन्होंने शिवाजी की अपार कृपा को सुन कर अत्यधिक सुख पाया है। भूषण कवि कहते हैं कि उन सब के मन में महाराज शिवाजी के आश्रय में आने की बड़ी हविस पैदा होगई है, उत्कृष्ट इच्छा उत्पन्न होगई है। (शिवाजी पृथ्वी पर के इन्द्र हैं अतएव) बहुतों ने तो उनके तलवार-रूपी बज्र से पक्षहीन होने के भय से शरण मार्ग ग्रहण कर लिया, अर्थात् इस डर से कि कहीं शिवाजी अपने तलवार-रूपी वज्र से हमारे पंख न काट दें, वे स्वयं शिवाजी की शरण में आ गये हैं, क्योंकि महापुरुष शरणागत को कष्ट नहीं देते। इस प्रकार पृथ्वी पर तेजस्वी तथा महाबली शिवाजी रूपी इन्द्र ने इन सब पर्वतों पर किले बना बना कर उन्हें सपक्ष कर दिया अर्थात् अपने पक्ष में ले लिया। (इस पद में कवि ने ऐतिहासिक तथ्य को बड़ी कुशलता से वर्णन किया है। शिवाजी ने अपने प्रबल शत्रुओं से लोहा लेने के लिए आस पास की

पहाड़ियों पर अनेक किले बनवाये थे, और इस प्रकार उन पहाड़ियों को अपने पक्ष में कर लिया था जिन पर उस समय तक अन्य किसी का राज्य न था। यह देखकर और शिवाजी के पराक्रम से डर कर आस पास के अनेक पहाड़ी किलों के मालिक भी शिवाजी की शरण में आ गये थे। उन्हें इस बात का डर था कि कहीं हमने शिवाजी के विरुद्ध कार्य किया तो शिवाजी हमारा किला नष्ट-भ्रष्ट कर देंगे। इसी ऐतिहासिक तथ्य को कवि ने आलंकारिक ढंग से वर्णन किया है)।

सूचना—यहाँ उपमेय शिवाजी में इन्द्र उपमान का आरोप है. किन्तु 'शैल का सपक्ष करना' रूप गुण इन्द्र में नहीं था, इन्द्र ने तो उन्हें पक्ष-रहित किया था, वह शिवाजी में आरोपित कर अधिकता प्रकट की है। अतः अधिक रूपक है।

पुराणों में लिखा है कि पहले पहाड़ों के पंख थे वे इधर उधर उड़ कर जहाँ तहाँ बैठते थे और इस प्रकार बड़ा जन-संहार करते थे। अतः इन्द्र ने अपने वज्र से एक बार इन पहाड़ों के पंख काट डाले। केवल मैनाक पर्वत ही समुद्र में छिप जाने के कारण बच गया, उसके पंख नहीं कटे और वह अभी तक छिपा पड़ा है।